UP Board Notes for Class 12 English Poetry Short Stories Chapter 1 The Gold Watch

The Gold Watch Story At A Glance

AS Sanku was a low-paid worker at a factory. He was very poor. His mother had died. He had a wife and two children. A third child was expected to come soon. He had to take loan from his fund to attend the death anniversary of his mother. So he was to pay the loan with interest. He owed some money to the store-keeper and tea- vendor. He owed some money to the fish woman also. There were also some other urgent needs of the family.

Thus Sanku was surrounded by many domestic problems. He was so much worried that he could not sleep in the night also. He was very much confused and disturbed. He tried to find out the way to end his misery. But he could not get any solution. Sanku had seen a gold watch on the table of the engineer. The engineer was his boss. He had seen that the watch remained lying on the table when the engineer went on lunch. So Sanku was tempted to steal it. He had no other alternative to solve his problems. He thought he would get a considerable amount of money by selling it. One day at 1 o'clock the bell rang for interval. Everybody was in a hurry to go out. The engineer also went home. His watch was still lying on the table. There was nobody in the office. So Sanku thought it was the best time to steal the watch. He went into the office. But he was very nervous. He was afraid of being caught red-handed. His heart throbbed. But his urgent needs prompted him not to go back. So he gathered courage and put the watch into his pocket with trembling hands. Then he came out.

Now he was again trembling with fear. He doubted that somebody had seen him. He thought he would be checked by the watchman at the gate. He would be dismissed from his service. So he was again much confused. He could not control his feelings. So he again went to the office, saw in all directions and put the watch back at its place. Thus his problems and miseries remained unsolved.

The Gold Watch Question Answer कहानी पर एक दृष्टि

संकू एके कारखाने में कम वेतन वाला मजदूर था। वह बहुत गरीब था। उसकी माता का देहान्त हो गया था। उसकी एक पत्नी और दो बच्चे थे। एक तीसरे बच्चे के आने की शीघ्र आशा थी। उसे अपनी माँ की बरसी में जाने के लिए अपने फण्ड में से कर्जा लेना पड़ा था। इसलिए उसे वह कर्जा ब्याज सहित चुकाना था। कुछ धन उसे दुकानदार को तथा कुछ धन चाय वाले को देना था। मछली वाली औरत का भी धन उधार था। परिवार की और बहुत-सी जरूरी आवश्यकताएँ थीं।।

इस प्रकार संकू अनेक घरेलू समस्याओं से घिरा हुआ था। वह इतना परेशान था कि रात को सों भी नहीं सकता था। वह बड़ा घबराया हुआ और चिन्तित था। वह अपने इन दुःखों को समाप्त करने का तरीका ढूंढ़ने की कोशिश करता था। किन्तु कोई हल नहीं ढूंढ़ सका। संकू ने इन्जीनियर की मेज पर एक सोने की घड़ी देखी। इन्जीनियर उसका अफसर था। उसने देखा कि जब इन्जीनियर दोपहर का भोजन करने जाता था तब भी घड़ी वहीं पड़ी रहती थी। इसलिए संकू को लालच आ गया कि वह उसे चुरा ले। अपनी समस्याओं को हल करने का उसके पास कोई और विकल्प था भी नहीं। उसने सोचा कि इसे बेचकर उसे काफी धन मिल जाएगा। एक दिन दोपहर को एक बजे मध्यान्तर की घण्टी बजी। प्रत्येक व्यक्ति बाहर जाने के लिए जल्दी में था। इन्जीनियर साहब भी घर चले गए। उनकी घड़ी अब भी मेज पर पड़ी थी। दफ्तर में कोई व्यक्ति नहीं था। इसलिए संकू ने सोचा कि घड़ी चुराने का यह सबसे अच्छा समय है। वह दफ्तर में गया। किन्तु वह बहुत घबराया हुआ था। उसे रंगे हाथों पकड़े जाने का भय था। उसका हृदय धड़क रहा था। किन्तु उसकी जरूरी

आवश्यकताएँ उसे पीछे न हटने के लिए प्रेरित कर रही थीं। इसलिए उसने साहस बटोरा और काँपते हुए हाथों से घड़ी को अपनी जेब में रख लिया। फिर वह बाहर आया। अब वह पुन: भय से काँप रहा था। उसे सन्देह हुआ कि किसी ने उसे देख लिया है। उसने सोचा कि गेट पर चौकीदार उसे रोक लेगा। उसे नौकरी से हटा दिया जाएगा। वह पुनः घबरा गया। वह अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण न कर सका। इसलिए वह दफ्तर में पुनः गया। चारों ओर देखा और घड़ी को वापस उसी स्थान पर रख दिया। इस प्रकार उसकी समस्याएँ और दुःख बिना हल किए ही रहे।

https://www.evidyarthi.in/